B.A. (Hons.) Part – III

5 × 4 = 20

DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Barachakia
BRABU – Muzaffarpur

Subject – SANSKRIT
Paper – VII
Short Notes

Dated – 24.07.2020

अलङ्कारों के सोदाहरण लक्षण–

7. रूपक अलङ्कार

यह साधर्म्यमूलक अलङ्कारों में प्राचीनतम अलङ्कार है रूपक अलङ्कार में उपमेय का उपमान पर आरोप किया जाता है। इसका लक्षण इस प्रकार है—

'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।' (मम्मट)

उपमान चन्द्रादि उपमेय मुखादि— वस्तुतः अभिन्न न होने पर भी अत्यन्त सादृश्य-प्रदर्शन के लिए काल्पनिक अभेद का यहाँ आरोप किया गया है। यथा—

'पर्याप्तपुष्पस्तबकस्तनाभ्यः स्फुरत्प्रवालोष्ठमनोहराभ्यः।
लतावधूभ्यस्तरवोऽप्यवापुर्विनम्रशाखाभुजबन्धनानि॥' (कु० 3/39)

कुमारसम्भव में शिव को लक्ष्य बनाकर मदन के द्वारा असमय में वसन्त के प्रादुर्भाव कर देने पर वृक्षों में भी मदन के उद्रेक का वर्णन है। वृक्षों ने भी अपनी झुकी हुई शाखारूपी भुजाओं के द्वारा अत्यधिक पुष्पगुच्छरूपी स्तनोंवाली, अभिनव पल्लवरूपी होठों से मनोहर लतारूपी वधुओं का आलिंगन प्राप्त किया।

यहाँ लताओं में वधुओं का, फूलों की गुच्छा आदि में स्तन का काल्पनिक भेदारोप किया गया है अर्थात् उपमानोपमेय लता और वधू, प्रवाल और ओष्ठ, पुष्पस्तबक और स्तन का अभेदरूप ही रूपक है।

— o —

क्रमशः जारी